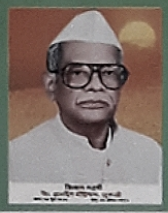

ISSN: 2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197(IIJIF)
(UGC Approved Journal No. 63716)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 4 NO. 1 JAN. 2018 BOOK VI
A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

SPECIAL ISSUE

On the Occasion of One Day National Conference On

WOMEN EMPOWERMENT IN INDIA

27th January, 2018

Editor
Dr. Namanand G. Sathe

Principal
Dr. A. D. Mohekar

ORGANIZED BY
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
DNYAN PRASARAK MANDAL'S
SHIKSHAN MAHARSHI DNYANDEO MOHEKAR MAHAVIDYALAYA,
KALAMB. DIST. OSMANABAD

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)
ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 3.012 (IIJIF)

CONTENTS

1.	महिलांचा राजकारणातील सहभाग	प्राचार्य व्ही.जी. गुंडरे(रेड्डी) प्रा.सचिन राजाभाऊ डहाळे	07
2.	'महिला सबलीकरण साठी भारत सरकारचे प्रयत्न'	प्रा.आर. एन. निगडे	09
3.	स्थानिक स्वराज्य संस्थामधील महिलांचा सहभाग	प्रा. एन.ए.पाटील	11
4.	स्त्रीवाद : स्त्रीउध्दाराचा विचार व स्त्रीसबलीकरणाची चळवळ	डॉ. सय्यद आर.जे.	14
5.	महिला सबलीकरण व भारत	डॉ. आर. बी. शेजूळ	19
6.	पक्षीय राजकारणात महिलाचासहभाग	प्रा.डॉ.अघाव एन. बी.	22
7.	स्थानिक स्वराज्य संस्थामधील महिला नेतृत्व एक चिकित्सक अभ्यास	डॉ.सुनिल चकवे	25
8.	महिला सबलिकरण	प्रा.चावरे एम. व्ही.	27
9.	महिला सबलीकरणाची साधने	डॉ. नामानंद गौतम साठे	29
10.	स्त्रियांसाठी भारतीय संविधानातील तरतूदी व स्त्रिवादाचे स्वरूप	बिराजदार अंबादास	31
11.	महिला सबलीकरण आणि भारतीय संविधान	प्रा.डॉ.बिडवे टी.एस	34
12.	महिला सक्षमीकरण आणि राजकारण	डॉ.भुजंग पाटील	36
13.	स्त्रीवाद : अर्थ, स्वरुप, विकास व प्रकार	डॉ. जगदीश देशमुख	39
14.	महिला सबलीकरण संकल्पना व स्वरूप	डॉ. अनिल दत्तू देशमुख	43
15.	Women Empowerment: Meaning, Concept …	Archana K,Chavare	46
16.	महिला सबलीकरणासाठी भारतात व महाराष्ट्रात झालेले प्रयत्न	डॉ. विलास नारायण ठाले, डॉ. दिनकर कळंबे	48
17.	स्त्रीवाद - अर्थ, स्वरुप, विकास प्रकार	डॉ. दिनेश रा. हंगे	51
18.	Empowerment of Women Political Participation in India	Dr. Vivek M. Diwan	53
19.	सार्वजनिक आरोग्य विभागामार्फत महिलासांठी राबविल्या जाणाऱ्या ….	डॉ.आमले एस.एस.	57
20.	स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि महिला सक्षमीकरण	प्रा.रासवे दिनकर सुदामराव	60
21.	डॉ.शंकर शेष के नाटकों में चित्रित 'स्त्री' चरित्र	प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी	62
22.	नेतृत्वाच्या माध्यमातुन महिला सक्षलिकरण	प्रा.सय्यद आर. आर.	65
23.	Mass Media and Women	Rajesh K. Gaikwad	67
24.	भारतीय महिला आणि आरक्षण	डॉ.राम प्र.ताटे प्रा.अर्चना शिवाजी वाघमारे	69
25.	पंचायतराज व्यवस्था आणि महिला सबलीकरण	डॉ. रमाकांत तिडके	71
26.	महिला सबलीकरणासाठी भारतात झालेले प्रयत्न	डॉ. आर.के. काळे	73
27.	स्त्रीवाद : अर्थ, विकास व प्रकार	क्षीरसागर दिलीपकुमार	76
28.	तत्कालीन समाजजीवनाचे दाहक वास्तव :मुक्ता साळवे यांचा निबंध	डॉ.सुशीलप्रकाश चिमोरे	79
29.	महिला सबलीकरण आणि सामाजिक बदल.	प्रा. आर. ई. भारूडकर	83
30.	Woman Empowerment in Rama Mehta's *Inside the Haveli*	Dr. Milind Mane	86
31.	Political Participation And Representation Of Women …	Dr. Mohan Chougule	88
32.	राजकीय नेतृत्व व महिला सक्षमीकरण	प्रा. मोरे चंद्रकांत	91
33.	Women's Empowerment And Political Participation	Shaikh G. A.	94
34.	भारतीय राजकारणात महिलांचा सहभाग आणि भूमिका	प्रा.महादेव रावसाहेब मुंडे	98
35.	स्त्रीवाद : अर्थ, स्वरूप व विकास	डॉ. पंडित महादेव लावंड	102
36.	Women Empowerment in India	Dr.P.W.Patil	106
37.	Women Empowerment — Challenges	Pradeep Ingole	108
38.	महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा सक्रीय सहभागाचा ...	डॉ.कदम एच.पी.	110
39.	स्त्री–सषक्तीकरण' की अवधारणा का सम्यक अध्ययन …	डॉ. विनोदकुमार	112
40.	महिला सबलीकरणात शासनाची भुमिका - एक दृष्टिक्षेप	प्रा.किरण कि. येरावार	116

ISSN: 2454-[illegible]
Impact Factor: 4.197 [illegible]

21.

डॉ.शंकर शेष के नाटकों में चित्रित 'स्त्री' चरित्र

('रत्नगर्भा' और 'बिन बाती के दीप' नाटक के उपलक्ष्य में।)

प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी
हिन्दी विभाग
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
उस्मानाबाद

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में विभिन्न साहित्यकार हुए जिन्होंने अपनी मौलिक रचनाओं के माध्यम से पाठकों को समृद्ध किया। कहानी, उपन्यास, नाटक जैसी विधाओं के माध्यम से मौलिक रचनाओं को प्रस्तुत करनेवालों की लंबी परंपरा रही है। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर आजतक विभिन्न रचनाकारों ने साहित्य के लिये मौलिक योगदान दिया है। जिनके कारण हिन्दी साहित्य आज समृध्द है। डॉ.शंकर शेष इन्हीं में एक मौलिक नाटककार है।

डॉ.शंकर शेष स्वातंत्र्योत्तर तीन दशकों की हिन्दी की नाट्य यात्रा के परिवर्तनों को देख चुके है। इसी कारण उनके नाटक तथा [illegible] संसार बदलते युग संदर्भो को वहन करने में सक्षम है। 'डॉ.शेष' के समकालीन नाटककारों ने लोकधर्मी तथा नाट्य धर्मी परम्पराओं का [illegible] कर हिन्दी नाट्य जगत को गौरान्वित किया 'डॉ.शेष' संभवत: धन के मोह से मानवीय जीवन में आने वाले पतन के प्रति बहुत सजग थे [illegible] प्रत्येक नाटक में इसी मोह के दुष्परिणामों को विविध दृष्टि से उन्होंने आंकने का प्रयत्न किया है। आधुनिक मध्यवर्ग का जीवन [illegible] नाटकोंमें चित्रित हुआ है। उन्होंने अपनी सारी जिंदगी महानगरों में गुजारी है।**बंधन अपने अपने, एक और द्रोणाचार्य**, घरौंदा, राक्षस [illegible] कृतियाँ महानगरीय संस्कृती की मूल्यहीनता और अनैतिकता को स्वर देती है। 'डॉ.शेष' ने अपने सभी नाटकों में भौतिक विघटन को [illegible] अध्यात्मिक एकता की स्थापना का प्रयास किया है। मध्यवर्ग की नपुसकता से वे भली-भाँती परिचित थे व्यवस्था के हाथ [illegible] द्रोणाचार्य को उन्होंने देखा था स्वार्थ के **'रक्तबीज'** उन्होंने इर्द गिर्द देखे थे जीवन **'मायावी सरोवर'** से मुक्त होने की आवश्यकता [illegible] अहसास उन्हे हो चुका था अपनी इन धारणाओं के आधारपर वे नाटक लिखा करते थे इसलिए तो उनके नाटक का कथ्य हमेशा [illegible] आता है। डॉ.शेषजी के नाटकों के पात्र मानवजीवन के वर्गगत भाव के उदाहरण है।

'डॉ.शंकर शेष' ने अपने अधिकांश नाटकों में सामाजिक प्रतिनिधिक चरित्रों की सृष्टि की है। उनके पात्र अपनी [illegible] विशेषताओं के साथ वर्गगत लक्षण भी जोडे जाते है। 'फंदी' निम्नवर्ग का, द्रोणाचार्य अध्यापक का 'सुदीप और छाया' शहरी [illegible] 'डॉ.गोयल' उच्च मध्यवर्ग का प्रतिनिधीत्व करते है। इन वर्गगत पात्रों के आलावा कई पात्र पर्याप्त व्यक्तिनिष्ठ चरित्र बनकर उपस्थित हुए है। शेष के पात्र कभी नाटककार की कठपुतली नहीं बनते उनके पात्रों में होने वाली स्वयं विकास की गति देखी जाती है। इनके नाटक केवल [illegible] बोध नही देते वे अपनी क्रिया कलापों से जीती जागती जिंदगी का निर्माण करते है। नाटक को बोधगम्य बनाने के लिए यह आवश्यक [illegible] है। शेषजी ने मूल्य दर्शन अपने रचना संसार में दिये है। जो एक आदर्श है। भारतीय समाज में मानवीय मूल्य और संस्कारों का [illegible] संस्कार जीवन में स्त्री द्वारा अधिकतम पुष्ट होते है। जिसके कई उदाहरण भारतीय इतिहास में मिलते है। साहित्यकारों ने अपनी [illegible] जीवन के महत्त्व को हमेशा चित्रित किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात नाटको का यह महत्वपूर्ण तथ्य है। कि स्त्री-पुरूष संबंधो पर भी स्वतंत्रता प्राप्ती का असर हुआ। [illegible] सामाजिक संरचना में परिवर्तन आने के कारण 'स्त्री-पुरूष' की दासता से मुक्ति की कामना करने लगी यह पुरूष के अधिकारों को चुनौती [illegible] हुए समानाधिकार की माँग करने लगी। पुरूष द्वारा निर्धारित नियमों की सीमा को तोडने का संघर्ष इस दौर की स्त्री में आया [illegible] चारित्रिक परिवर्तन है। इस दौर की स्त्री वक्त की बदलती परिस्थितीयों मे अपनी प्रतिष्ठा के लिए समाज से संघर्ष करती है। वह पुरूषों के [illegible] ही सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लडती है। यह परिवर्तन अस्वाभाविक नही है। इस देश में सदियों से नारी सामाजिक शोषण का शिकार होती रही है। सदियों से होते दमन-शोषण की घुटन एकाग्र होकर व्यक्त होने के लिए छटपटाने लगी। यह सदियों कि [illegible] होना है।

भारतीय नारी शिक्षा-प्राप्ती के कारण अपनी स्वतंत्रता और अधिकारो के प्रति सचेत हुई है। इस निर्णय स्वतंत्रता और [illegible] ने और उसके व्यक्तित्व में संघर्ष-चेतना उत्पन्न की और वह पुरूष तथा उसके द्वारा संचालित समाज में अपनी वास्तविक स्थान की माँग करने लगी। सदियों से पुरूष द्वारा उपेक्षित औरत को समाज में उचित जगह नही मिल पाई थी। अब औरत जागरण की नई [illegible] बंधन से बाहर निकल आयी। वह शिक्षा तथा अन्य दूसरे क्षेत्रों में पुरूषो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति के रास्ते पर आगे बढी। अब [illegible] पुरूषो के आश्रय में तथा उनकी कृपा पर पलनेवाली इशारेपर नाचनेवाली जड काठ की गुडिया नही रह गई बल्कि उसने समाज में पुरूष [illegible]

बराबर ही अपनी जगह बनाई। समाज मे स्त्री की वास्तविक भूमिका या स्थान पुरूष के पीछे नही, बिलकुल उसके साथ है। यह बोध स्वस्थ परिवर्तन का सुचक है। इससे स्त्री को पुरूष से नही समाज के पाखंडो से मुक्त होने का साहस प्राप्त हुआ है।

'शंकर शेष' ने समकालीन मनुष्य और उसके समाज दोनो के घात-प्रतिघात को समजा है। उनके नाटकों में जो सामाजिक सांस्कृतिक संघर्ष हुआ है। वह एकयामी नही है। उसके आर्थिक-राजनीतिक संदर्भ और पारिवारिक आशय भी स्पष्ट है। इससे सामाजिक परिवर्तनों की प्रामाणिक सुचना ही नही मिलती हम उन कोनो-अंतरो के बारे में भी सोचने को विवश है। जहाँ अब तक हमारा ध्यान नहीं गया था उदाहरण के लिए 'रत्नगर्भा' की 'इला' और 'माया' का 'जगदीश' और 'सुनील' के प्रति संघर्ष केवल स्त्री और पुरूष का परम्परागत संघर्ष नही है। उनके अर्धकेंद्रित मानवीय अतिइच्छाएँ तथा सद्भावनाएं और हमारी सामाजिक आस्थाओं की टकराहट भी निहित है। नाटक में वर्णित ईमानदारी की कमाई और विलास का आनंद स्वयं में द्वंन्द्वग्रस्त सत्य है। परिवर्तित परिस्थितीयो के इस संघर्ष को **'शंकर शेष'** ने सामाजिक सांस्कृतिक धरातल पर खडा किया है। 'शंकर शेष' ने परिवार को महत्वपूर्ण माना है। और उसके सदस्यों का संघर्ष है जो मानवता की एक नयी कहानी कहता है।

'शंकर शेष' के नाटकों में भारतीय संस्कृति के परिवार और कुटुम्ब के संबंध में अधिक चिंतन हुआ है। उनके नाटक परिवार का एक चित्रण है। जिसके माध्यम से पात्र अपने रिश्तो और नातो के माध्यम से जीवन संघर्ष की कहानी पेश करते है। शेष का 'रत्नगर्भा' नाटक इसी विचारधारा से संबंधित है।

"सामाजिक के तथाकथित जिम्मेदार लोग अपनी आर्थिक ऐयाशी की पूर्ति के लिए कितना गिर सकते है। इन संवादो से यह भी ध्वनित होता है। कि स्त्री-पुरूष संबंधो मे निखराव का एक कारण आर्थिक असमानता भी है। और पैसे के लिए पति-पत्नी के संबंध को भी एक झटके में तोडा जा सकता है। मानव '

"डॉ.शेष ने चेतनासंपन्न पात्रों में अधिकतर स्त्री पात्रों को उठाया है। उनका प्रत्येक स्त्री पात्र नैतिकता को अपनाते हुए भारतीय संस्कृति का प्रतीक बन गया है। फिर भी अनेक स्थलों पर वे नारी-उध्दार, नारी-शोषण तथा नारी-शिक्षा की बात को उठाते है। नारी जीवन उनके मार्ग में एक नया आयाम बनकर आया है। जो नाटकों को एक नयी शक्ति प्रदान करता है। बडी आश्चर्य की बात यह है। कि एक बडे धार्मिक परिवार में बढकर भी 'डॉ.शंकर शेष' जी के विचार एकदम नये क्यों? यही आश्चर्य उनकी पत्नी 'सुधा' जी को हुआ था इतने बडे परिवार एवं धार्मिक वातावरण में बढकर यह युवक इतने आधुनिक विचार केसे रखता है?स्त्री शिक्षण आदि को बढावा केसे दे सकता है? बदलते परिवेश एवं बदलती नैतिकता के साथ उनके पात्र सजिव बनकर संघर्ष करते है। और सांस्कृतिक धरातल पर ऐसा संस्पर्श करते है। जिससे मनुष्य समाज का चरित्र उच्चतम हो उठा है।

'शंकर शेष' ने अपने नाटकों में स्त्री जीवन के प्रति उदारता दिखाते हुए उसकी महानता को सिध्द करने का प्रयास किया है। स्त्री ही जीवन का आधार होती है।

"स्त्री का समग्र व्यक्तित्व मुख्य नहीं होता है। स्त्री के शरीर के मुख्य होने की हमारी दृष्टि में कामुकता से अधिक कुछ भी नहीं है। कामुक समाज वस्तुत: आत्ममुग्ध समाज होता है। उसकी संस्कृति संकिर्ण ही होगी कामुक समाज स्त्री के शरीर पर ही मुग्ध हो सकता है। उसकी संस्कृति संकिर्ण ही होगी कामुक समाज स्त्री के शरीर पर ही मुग्ध हो सकता है। एक है उसके हृदय से प्रभावित नहीं हो सकता हृदय के दो पक्ष है। एक है 'विचार' पक्ष दुसरा है 'भावना' पक्ष स्त्री के व्यक्तित्व के इन दोनों पक्षो से उसे अलग करके देखने की दृष्टि विकसित हुई।"

'शंकर शेष' जी का प्रथम नाटक 'मूर्तिकार' था। उसके बाद उन्होंने जो नाटकों की सृजन परम्परा शुरू की एक से बढकर एक प्रौढ नाटक लिखने आरंभ किये उनके सभी नाटक उनकी सूझबूझ का परिचय देते है। नारी के प्रति शेष का दृष्टिकोन पहले ही सहिष्णुतावृत्ती का रहा है। नारी के आदर्श वे अपने लेखन के माध्यम से समाज के सामने रखने की कोशिश करते है। नारी के लिए आज भी उसका पति ही परमेश्वर होता है। यह धारणा समाज में आज भी है। त्याग और बलिदान की मूरत नारी है पति-पत्नी के रिश्ते में कितने भी दरार क्यों न आए स्त्री उस दरार को हमेशा पाटने की कोशिश करती है... शेष के सभी नाटकों मे सत्य और असत्य के बीच झगडा दिखायी देता है। नैतिकता - अनैतिकता का भेद दिखाई देता है।

'रत्नगर्भा' नाटक 'शंकर शेष' का महत्वपूर्ण नाटक है। 'रत्नगर्भा' का नायक 'सुनील' प्रतिष्ठा और पैसो को महत्व देता है। प्रेम से अधिक इसको ही वह महत्व देता है पैसो के लिये अपनी पत्नी की हत्या के लिए भी वह तैयार होता है। अपनी पत्नी के खिलाफ साजिशे रचता है। डॉक्टर होकर अपनी पत्नी को जहर देने की कोशिश करता है। उसकी पत्नी 'इला' उसके प्रति उदार अंतरमन से व्यवहार करती है। गंगा जैसा पवित्र भाव उसके अंतरमन में है। अंतिम तक पैसो और स्वार्थ के लिए जिता 'सुनिल' दिखाई देता है।

'इला' और 'सुनिल' का जीवन संघर्ष नाटक में स्पष्ट है। नाटककार यहाँ प्रस्तुत करते है। की आधुनिक जगत में प्रेम करते समय मन से अधिक इन्सान तन को महत्व देता है। 'इला' जेवर बेचकर 'सुनिल' को विदेश डॉक्टर बनाने के लिए भेजती है। बीच के अंतराल में वह आग के कारण से जलती है। उसका चेहरा बिगड जाता है। शुरू में 'सुनिल' अपने पत्नी के प्रति थोडा समर्पित है। लेकिन वह बाद में बदलजाता है।

ISSN: 2454-[illegible]
Impact Factor: 4.197 [illegible]

'इला' 'रत्नगर्भा' नाटक की नायिका है। 'इला' के माध्यम से 'शेष' ने नारी के प्रति दृष्टिकोन का विचार किया है। 'इला' त्याग, [illegible] प्रेम का रूप है। आदर्श पत्नी है। और भारतीय नारी का वह प्रतिरूप है। "वह त्याग, प्यार, श्रध्दा, बलिदान का प्रतिरूप है। जो पुरूष के [illegible] में पीयुष स्त्रोत की भाँति बहाँत है। वह पिघलती भी है। तो फूलों की रसवंती आग में।"

'इला' के समर्पित भाव त्याग और प्रेम के कारण 'सुनिल' में बदलाव आता है। पती को बदलने के लिए नारी की भूमिका [illegible] महत्वपूर्ण होती है। पुरूष के लिए स्त्री ही प्रेरणा होती है। बनावटी जिंदगी भोगनेवालों पर लेखक ने व्यंग्य किया है। लेखक कहते है [illegible] जीने का अधिकार प्रकृति ने दिया है। फिर वह सुंदर हो अथवा कुरूप उसका यह अधिकार कोई भी नहीं छिन सकता है। सत्य, त्याग, [illegible] न्याय, प्रेम, विश्वास इसी में सच्चा सौंदर्य है। लेखक यहाँ युगों से चला आरहा पती का अत्याचार दिखाने का प्रयास करते है। नारी [illegible] और पतिव्रता बनकर नहीं रहती वह अपने पती को योग्य दिशा दिखा सकती है। उसकों रास्ते पर ला सकती है। नाटककार इस नाटक [illegible] दिखाने की कोशिश करते है। 'शंकर शेष' का अन्य महत्वपूर्ण नाटक 'बिन बाती के दीप' है।

'बीन बाती के दीप' यह नाटक एक तरह से प्रतिष्ठा और पैसो के लिए किये जानेवाले धोखे को लेकर लिखा हुआ नाटक है। [illegible] अपनी शान और शौक के लिए अपनी बीवी को कैसे इस्तमाल करता है। उसको मोहरा बनाकर अपनी जिंदगी का सुख भोगता है। नाटक [illegible] 'शिवराज' जैसा पात्र जो अपनी पत्नी को धोका देकर उसकी प्रतिभा का गलत इस्तेमाल करता है। यहाँ तक की अपने स्वार्थ के लिए [illegible] पत्नी को अंधा तक बनाता है। लेकिन 'विशाखा' 'शिवराज' से बेहद प्यार करती है। उसके षडयंत्र को वह जान नही पाती वह [illegible] पालन करती है। और अपने आपकों कोसती रहती है। वह 'शिवराज' के किसी काम नहीं आती है। लेकिन 'शिवराज' का सच उसके [illegible] आता है। तो उसको बहुत बुरा लगता है।

मध्यवर्ती सामाजिक नैतिकता के पतन के साथ पति-पत्नी के पारिवारिक वातावरण का चित्रण 'बिन बाती के दीप' नाटक में [illegible] किया है। भारतीय संस्कृति की नारी उदारता को भी नाटककार यहाँ प्रस्तुत करते है। जो अपने पति के अपराध के बाद भी उसको [illegible] है। और उसे अपनाती है। नाटक के संवाद इस अर्थ का प्रतिक है।

'शिवराज' का 'विशाखा' को धोका देकर अपने नामपर पुस्तक छापना है। जो प्रतिष्ठा के लिए और स्वार्थ के लिए है। जिसको [illegible] के माध्यम से उजागर किया जाता है।

'डॉ.शेष' की सबसे पहले प्रकाशित रचना यह नाटक माना जाता है। नाटक में नाटककार ने स्त्री पुरूष संबधों के विभिन्न [illegible] चर्चा की है। नारी के समर्पित भाव, त्याग और निस्वार्थ स्वरुप को यहाँ उजागर करने की कोशिश की है। यह 'शिवराज' और 'विशाखा' [illegible] जीवन का संघर्ष है जिसमें नैतिकता और अनैतिकता के विचारबोध प्राप्त होते है। यहाँ 'विशाखा' प्रतिभासंपन्न नारी है। 'शिवराज' [illegible] केवल स्वार्थ और महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिए वह 'विशाखा' को धोका दे रहा है। उसको अंधा भी वह करता है। गलत दवाई [illegible] के कारण उसके आँखो की रोशनी चली जाती है। 'विशाखा' द्वारा लिखे उपन्यास को वह अपने नाम से छापवाता है। और उपन्यास [illegible] ले लेता है। 'शिवराज' मंजू के साथ शादी करने का वादा भी करता है। 'मेजर' आनंद विशाखा को सब बताता है।

'विशाखा' के साथ ऐसा बर्ताव करने के बाद भी विशाखा के मन में उसके प्रति आदरभाव है। वह उससे प्रेम करती है। और [illegible] दोष वह नहीं मानती है। 'शिवराज' ने अंधी औरत से शादी करके अपने साहस का परिचय दिया है। ऐसा वह मानती है। नाटककार ने [illegible] जैसे व्यक्ति का यहाँ पर्दाफाश किया है। जो समाज में जी रहें है। जो अपने स्वार्थ के लिए अपनी पत्नी को धोका देते है। 'बीन बाती के [illegible]' नाटक 'विशाखा' की अंधी आँखो का प्रतीक है।

इन स्त्रियोंने जिन्हे गर्वित समाज पतित के नाम से सम्बोधित करता आ रहा है। पुरूष की वासना की वेदीपर कैसा [illegible] दिया है। इस पर कभी किसी नेंविचार नहीं किया। पुरूष की बर्बरता, रक्तलोलुपता पर बलि होने वाले युध्द वीरों के चाहे स्मारक [illegible] पुरूष की अधिकार-भावना को अधुरा रखने के लिए प्रज्वलित चितापर क्षण भर में जहाँ मिटने वाली नारियों के नाम चाहे इतिहास [illegible] सुरक्षित रहे सके परन्तु पुरूष की कभी न बुझनेवाली वासगाग्नि में हँसते हँसते अपने जीवन को तिल-तिल जलाने वाली इन [illegible] मनुष्य जाति ने कभी दो बूँद आंसू पाने का अधिकारी भी नहीं समझा न समझना अधिक स्वाभाविक था। स्त्री का जीवन हमेशा त्याग और [illegible] का उदाहरण रहा है। इसी कारण भारतीय संस्कृति नें स्त्री को महान नारी का दर्जा दिया है। इसी स्त्री का संबल पाकर आज पुरूष [illegible] है। शायद इसी कारण से कहा जाता है। कि हर कामयाब पुरूष के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

१) शंकर शेष की नाट्य कला :- डॉ. प्रकाश नारायण जाधव
२) शंकर शेष के नाटकों का रंग शिल्प :- डॉ.जशवंत भाई डी.पंड्या
३) शंकर शेष आधुनिक हिन्दी के प्रतिनिधी :- डॉ.शमली एम.एम.
४) शंकर शेष के नाटकों में शेष विशेष :- डॉ.भुक्तरे बळीराम संभाजी

❑❑❑